International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 1; Issue 5; September 2016; Page No. 25-29

शहडोल जिले की माध्यमिक शालाओं में आयोजित निदानात्मक कक्षाओं में कमजोर छात्रों की वास्तविक स्थिति का अध्ययन

चन्द्र कुमार सिंह

शोधार्थी (शिक्षा), अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

शोधार्थी ने शहडोल जिले की माध्यमिक शालाओं में आयोजित निदानात्मक कक्षाओं में कमजोर छात्रों की वास्तविक स्थिति का अध्ययन किया। निदानात्मक शिक्षा में बालकों की अशुद्धियों का संशोधन किया जाता है। बालक के पिछड़ेपन, दुर्बलताओं का ज्ञान होने, उनके निराकरण के लिए जो कार्य किया जाता है उसे निदानात्मक शिक्षण माना जा सकता है। निदानात्मक शिक्षण के पूर्व उसके कारणों का ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है इसके साथ ही बालक की प्रकृति का ज्ञान भी आवश्यक है। निदानात्मक कक्षाओं से कमजोर छात्रों के गणित विषय में 50 प्रतिशत कठिन अंशों का निराकरण होता है ऐसा मत 69.34 प्रतिशत शिक्षकों का है, 25 प्रतिशत ही कठिन अंशों का निवारण होता है ऐसा मत 20.00 प्रतिशत शिक्षकों का, 75 प्रतिशत ही कठिन अंशों का निवारण होता है ऐसा मत 10.66 प्रतिशत शिक्षकों का है साथ ही 100 प्रतिशत कठिन अंशों का निवारण नही हो पाता है। जिले में 72.00 प्रतिशत प्राचार्यो एवं 78.67 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि माध्यमिक स्तर में निदानात्मक कक्षाओं से शिक्षक उनकी त्रुटियों एवं कमियों को दूर करने का प्रयास करते है।

मूलशब्द: शहडोल जिला, माध्यमिक शाला, निदानात्मक कक्षा, वास्तविक स्थिति

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के सम्यक विकास के लिए एक ऐसी जीवंत प्रक्रिया है, जो समग्र जीवन को अपेक्षित दिशा की ओर मोड़ती, सजाती–संवारती और रचनात्मक कार्य करने की शक्ति को विकसित करती है। मनस्वी, ओजस्वी और तेजस्वी व्यक्ति शिक्षा की ही उपज है। शिक्षा के द्वारा हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है, जो हमारे व्यवहार में परिवर्तन करता है।

दार्शनिक एपीक्टेस के अनुसार – "केवल शिक्षित व्यक्ति ही स्वतंत्र है।"

उपनिषदों में भी शिक्षा के अर्थ और महत्व को स्पष्ट किया गया है – "सा विद्या या विमुक्तए"। उपनिषद के इस वाक्य के अनुसार विद्या वही है जो मनुष्य को मुक्त होने में सहायक हो। शिक्षा विदों ने शिक्षा को जीवन पर्यन्त चलने वाली गतिशील प्रक्रिया माना है, जो व्यक्ति में ज्ञान कौशल एवं व्यवहार में परिवर्तन लाकर विकास करती है। अर्थात ज्ञानं तृतीयं मनुजस्यं नेत्रम्।

"शिक्षा एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के जन्मजात गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व को निखारती है और सामाजिक वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने के योग्य बनाती है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को उसके कर्तव्यों का ज्ञान कराते हुए उसके विचार एवं व्यवहार में समाज के लिए हितकर परिवर्तन करती है।"

छात्रों के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया में राज्य सरकारें शैक्षिक संप्राप्ति के सुधार हेतु अपना पूरा ध्यान केन्द्रीकृत कर नवाचारी प्रयोगों को प्रोत्साहित कर रही हैं। प्रत्येक विद्यालय की प्रत्येक कक्षा में कुछ ऐसे छात्र होते है, जो मंद गति से अध्ययन करते है या अध्ययन में कठिनाइयों का सामना करते है, जिससे शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है और ये विद्यार्थी समाज में समस्या मूलक बनकर बाधाएँ खड़ी करते है।

सामान्य विद्यालयों में अत्यधिक भीड़ का जो स्वरूप देखा जाता है उसमें प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना संभव ही नही है। कक्षा में छात्रों की संख्या एक निश्चित एवं मानक रूप में न होने पर अध्यापक छात्रों की वैयक्तिक विभिन्नताओं पर पर्याप्त ध्यान नही दे पाते हैं। इसके साथ ही छात्र विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से जुड़े होते है। परिणामतः उनके शैक्षिक संप्राप्ति में अंतर होना स्वाभाविक है। कम बुद्धि लब्धि एवं वातावरण जनित पिछड़ेपन के कारण एक ही प्रकार का पाठ्यक्रम ऐसे छात्रों को बोझिल लगने लगता है, जिससे उनमें अरुचि व निराशा का भाव पैदा होने लगता है। साथ ही प्रतिभावान और कम उपलब्धि वाले छात्रों को एक ही प्रकार की शिक्षण पद्धति से पढ़ाना कठिन होता है, क्योंकि एक के सीखने की गति तीव्र और दूसरे की कम होती है। निःसन्देह ऐसे पिछड़े बालकों के लिए कुछ विशिष्ट शैक्षिक प्रावधान किये गये है जिससे उनके पिछड़ेपन को दूर करके उन्हें मुख्य शैक्षिक धारा में सुचारु रूप से आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। प्रगतिशील विद्यालयों में पिछड़े बालकों को उपचारी शिक्षण विधि से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

अध्यापकगण, अभिभावक तथा सहपाठी अपने अवलोकन व निरीक्षण के दौरान पिछड़े बालकों की पहचान कर सकते है। गृह कार्य करने में कटिनाई का अनुभव करने वाले, कक्षा में अध्यापक के प्रश्नों का समुचित उत्तर देने में असमर्थ रहने वाले, परीक्षाओं में ग्रेड 'डी' एवं 'ई' प्राप्त करने वाले अथवा पढ़ाई से जी चुराने वाले बालक पिछड़े बालक हो सकते है। विभिन्न प्रकार के प्रमापीकृत संप्राप्ति परीक्षणों से ऐसे पिछड़े बालकों की पहचान कर उपचारी शिक्षण द्वारा उनकी समस्याओं का निदान किया जा सकता है। ऐसे बालको के लिए म. प्र. स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा विशेष निदानात्मक कक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है, जिनमें पिछड़े बालक अपनी रुचि, आवश्यकता व परिस्थिति के अनुरूप शिक्षा प्राप्त कर मुख्य धारा में समाविष्ट हो सकते हैं।

निदान से तात्पर्य समस्या अन्वेषण एवं उसके समाधान से है। बालक सामान्यतः वाचन, पठन, लेखन, क्रिया, प्रक्रिया में दोष करता है। अध्यापक विविध विधियों, विधाओं, प्रक्रियाओं के माध्यम से उनका संशोधन करता है। बालक की कमजोरियों, पिछड़ेपन का निराकरण करने के निमित्त जो शिक्षण किया जाता है उसे

निदानात्मक शिक्षण कहतें हैं। श्री एस.के. अग्रवाल– "शिक्षा में निदान का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा हम शिक्षण सम्बन्धी कमजोरियों के मूल कारण और प्रकृति का निर्णय करतें हैं।" डॉ. श्रीधर वशिष्ठ – "शैक्षिक प्रक्रिया में निदान बालकों के सभी पक्षों में सहयोग देकर शैक्षिक प्रक्रिया को शाश्वत रुप देता है।"

निदानात्मक शिक्षण का एक अन्य प्रतिरुप भी माना गया है जिसे विकासात्मक कहतें हैं। इसमें बालक के द्वारा सीखे गए कार्यों को विकसित किया जाता है। निदानात्मक शिक्षण इस प्रक्रिया में इसका सहयोग करता है। निदानात्मक शिक्षण के पूर्व उसकी प्रकृति का ज्ञान आवश्यक है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

शैक्षिक प्रगति की एक झलक देखें तो हमें ज्ञात होता है कि समूचे शहडोल जिले का 2010–11 में माध्यमिक शालाओं का परीक्षा परिणाम 35 प्रतिशत से भी कम रहा। 2011–12 के दौरान जब ग्रेड डी एवं ई प्राप्त छात्रों का निदानात्मक शिक्षण विधि द्वारा अध्यापन किया गया तो परीक्षा परिणाम 65 प्रतिशत रहा। ऐसी स्थिति में शिक्षा के अपेक्षित परिणाम के लिए निदानात्मक शिक्षण की वांक्षनीयता और भी बढ़ जाती है। वास्तव में निदानात्मक कक्षाओं की अवधारणा नवीन नहीं है, अतीत से ही योग्य शिक्षक मंद गति से सीखने वाले छात्रों के अधिगम संबंधी दोशों को पूरा करने का प्रयास किये हैं।

शोध कार्य के महत्व को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

- यह शोध कार्य निदानात्मक कक्षाओं के फलस्वरूप छात्रों की उपलब्धि का अध्ययन करने में सहायक होगा।
- निदानात्मक कक्षायें ढंग से संचालित हो रही है या नही इसकी जानकारी प्राप्त होगी।
- निदानात्मक कक्षाओं के फलस्वरूप परीक्षा परिणाम में कहाँ तक सुधार हुआ? यह जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

उद्देश्य

शैक्षिक समस्याओं के समाधान की दिशा में कुछ निश्चित विन्दु होते हैं, जिनको प्राप्त करने की दिशा में शोध उन्मुख होता है। यही बिन्दु शोधार्थी द्वारा शोध के उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं जो निम्नांकित है–

1. निदानात्मक कक्षायें शहडोल जिले में किन–किन माध्यमिक स्कूलों में संचालित है, की जानकारी प्राप्त करना।
2. निदानात्मक कक्षाओं के प्रति शिक्षकों और छात्रों की अभिरुचि का आकलन करना।
3. गणित विषय के संदर्भ में निदानात्मक शिक्षण का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. निदानात्मक शिक्षण के दौरान ग्रेड डी एवं ई के छात्रों की उपस्थिति एवं सहभागिता का अध्ययन करना।

परिसीमांकन

प्रस्तुत शोधकार्य का क्षेत्र शहडोल जिले के सभी विकासखण्डों से 5–5 विद्यालय कुल 25 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया गया। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के माध्यमिक स्तर के विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित है।

न्यादर्श

शोध कार्य के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शासन द्वारा संचालित निदानात्मक कक्षाओं के प्रभावों का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 3–3 शिक्षक कुल 75 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

अध्ययन पद्धति

शोधार्थी का शोध वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण मूलक अनुसंधान की श्रेणी में आता है। शोध कार्य के दौरान निम्न शोध विधियों एवं उपकरणों का समावेश किया गया है–

1. सर्वेक्षण विधि
2. अवलोकन विधि

चयनित विधियों में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. साक्षात्कार पत्रक
2. प्रश्नावली

शोध क्षेत्र से संबंधित पूर्व में किये गये कार्यो की संक्षिप्त समीक्षा

किसी भी अध्ययन कार्य को करने से पहले उस विषय से संबंधित पूर्व विद्वानों के कार्यो का अवलोकन उससे संबंधित साहित्य के अध्ययन से अध्ययन कार्य में सहायता मिलती है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी ने अपने सीमित प्रयासों से नजदीकी विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में भ्रमण किया तथा विषय से संबंधित पूर्व में किए गए अनुसंधानों का अध्ययन किया, जो निम्नानुसार है– अस्थाना, विपिन (1977); खातून, जे. (1988); प्रधान गोपाल चन्द्र, (1994); सिंह, राजमल एण्ड वर्मा, एस.के., (1995); श्रीवास्तव, मयंक कुमार, (2004) ने माध्यमिक शालाओं में आयोजित निदानात्मक कक्षाओं में कमजोर छात्रों की वास्तविक स्थिति का अध्ययन किया।

शोध क्षेत्र का संक्षिप्त परिचय

शहडोल जिला भारत वर्ष के हृदय स्थल मध्य प्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में $22^0 38'$ उत्तरी अक्षांश से $24^0 20'$ उत्तरी अक्षांश एवं $80^0 28'$ पूर्वी देशांतर से $82^0 12'$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। शहडोल जिले का नाम सोहागपुर गॉव के शहडोलवा अहिर के नाम पर आधारित है। शहडोल जिले का कुल क्षेत्रफल 5671 वर्ग कि.मी. है। इस जिले की उत्तर से दक्षिण की अधिकमतम लम्बाई 170 कि.मी. तथा पूर्व से पश्चिम की अधिकतम लम्बाई 110 कि.मी. है। प्रशासकीय दृष्टि से शहडोल जिले में चार तहसीलें–सोहागपुर, जैतपुर, ब्यौहारी, एवं जयसिंह नगर हैं। तथा पॉच विकासखण्ड–सोहागपुर, पाली, ब्यौहारी, बुढ़ार एवं जयसिंह नगर हैं।

प्रदत्तों का सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र में संकलित किये गये प्रदत्तों का सारणीयन कर उनका विश्लेषण एवं व्याख्या की गई प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्नानुसार हैं–

सारणी 1 : निदानात्मक कक्षाओं में कमजोर छात्रों (ग्रेड – डी, ई) की वास्तविक स्थिति का अध्ययन (शिक्षक साक्षात्कार के अनुसार)

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	25 प्रतिशत	15	20.00
2.	50 प्रतिशत	52	69.34
3.	75 प्रतिशत	08	10.66
4.	100 प्रतिशत	–	–

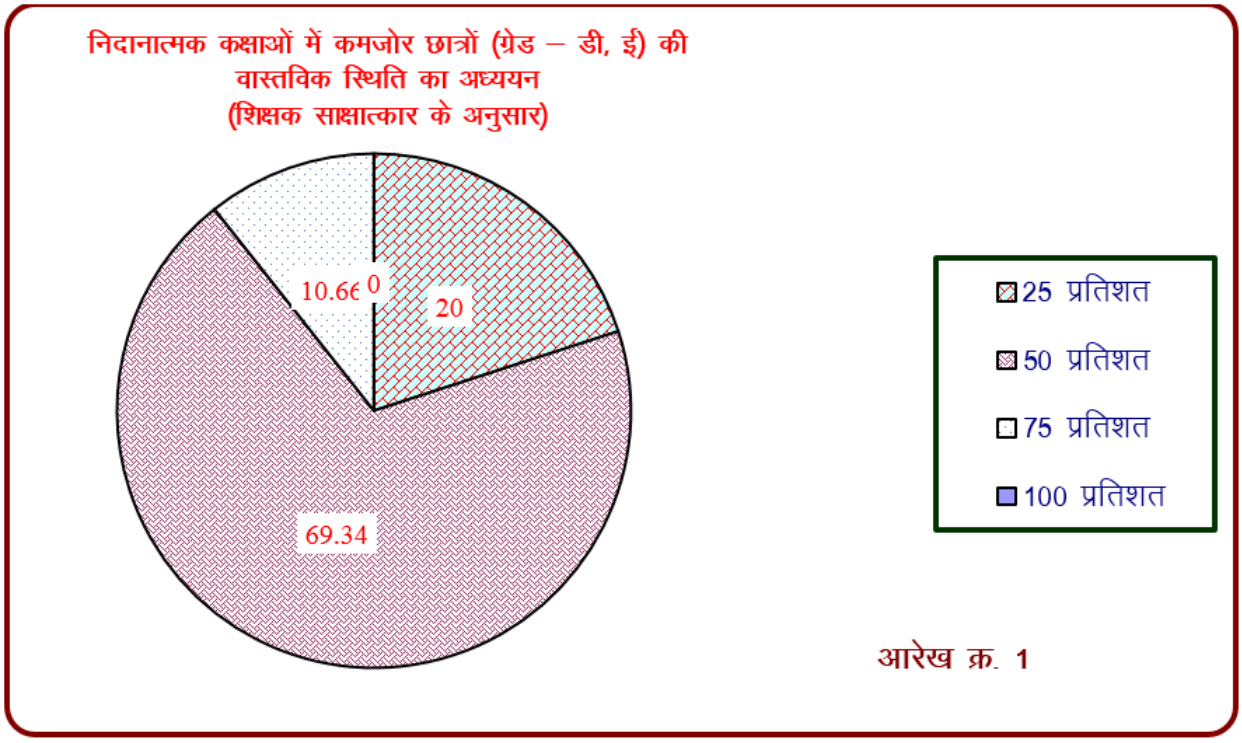

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि निदानात्मक कक्षाओं से कमजोर छात्रों के गणित विषय में 50 प्रतिशत कठिन अंशों का निराकरण होता है ऐसा मत 69.34 प्रतिशत शिक्षकों का है, 25 प्रतिशत ही कठिन अंशों का निवारण होता है ऐसा मत 20.00 प्रतिशत शिक्षकों का, 75 प्रतिशत ही कठिन अंशों का निवारण होता है ऐसा मत 10.66 प्रतिशत शिक्षकों का है साथ ही 100 प्रतिशत कठिन अंशों का निवारण नही हो पाता है ऐसा मत शिक्षकों ने स्वीकार किया है। अतः कहा जा सकता है किनिदानात्मक कक्षाओं द्वारा शत–प्रतिशत कठिनाइयों का निवारण सम्भव नही है किन्तु अधिकांश कठिन अंशों का निवारण किया जा सकता है।

सारणी 2 : निदानात्मक कक्षाओं से शिक्षक उनकी त्रुटियों एवं कमियों को दूर करने का प्रयास करते है का अध्ययन (प्राचार्य साक्षात्कार के अनुसार)

क्र.	विकासखण्ड	प्रयास करते है		प्रयास नही करते है	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	ब्यौहारी	3	60.00	2	40.00
2.	बुढ़ार	4	80.00	1	20.00
3.	गोहपारू	4	80.00	1	20.00
4.	जयसिंहनगर	3	60.00	2	40.00
5.	सोहागपुर	4	80.00	1	20.00
योग		18	72.00	7	28.00

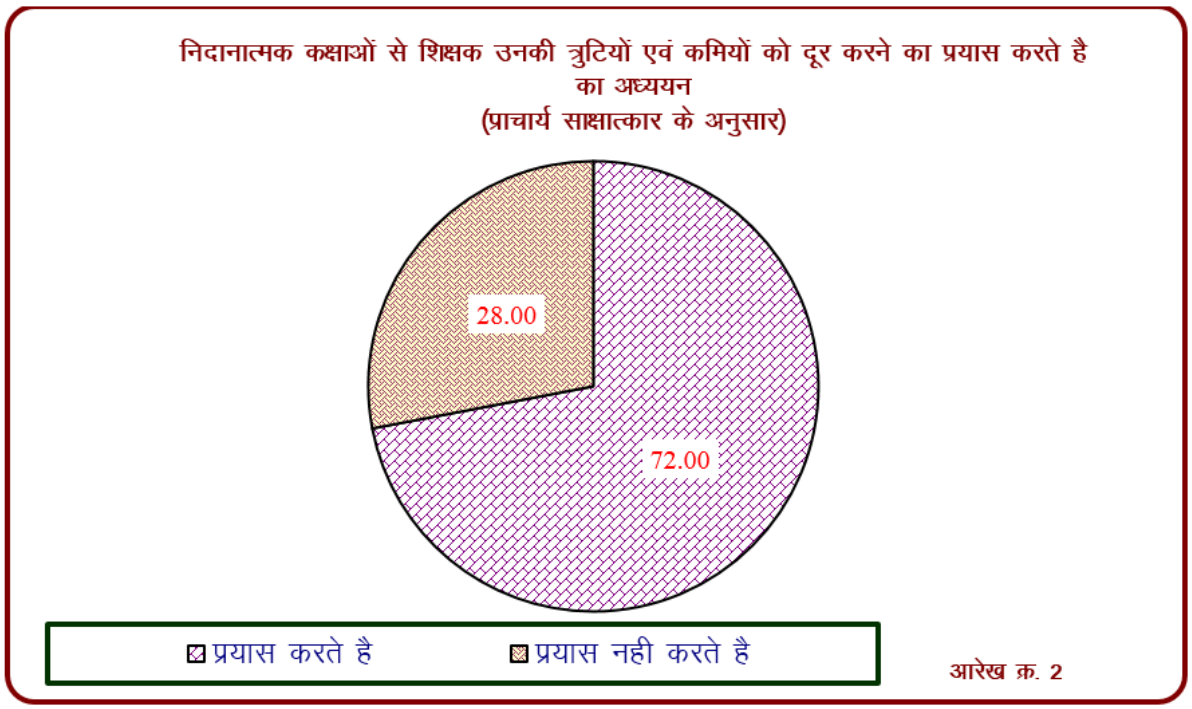

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 2 में शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर में निदानात्मक कक्षाओं से शिक्षक उनकी त्रुटियों एवं कमियों को दूर करने का प्रयास करते है से संबंधित जानकारी का अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर के 25 प्राचार्यो से साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी एकत्रित किये गये।

बुढ़ार, गोहपारू व सोहागपुर विकासखण्ड में 80.00 प्रतिशत, ब्यौहारी व जयसिंहनगर विकासखण्ड में 60.00 प्रतिशत प्राचार्यो का अभिमत है कि माध्यमिक स्तर में निदानात्मक कक्षाओं से शिक्षक उनकी त्रुटियों एवं कमियों को दूर करने का प्रयास करते है।

ब्यौहारी व जयसिंहनगर विकासखण्ड में 40.00 प्रतिशत तथा बुढ़ार, गोहपारू व सोहागपुर विकासखण्ड में 20.00 प्रतिशत प्राचार्यो का अभिमत है कि माध्यमिक स्तर में निदानात्मक कक्षाओं से शिक्षक उनकी त्रुटियों एवं कमियों को दूर करने का प्रयास नही करते है।

इस प्रकार जिले में 72.00 प्रतिशत प्राचार्यो का अभिमत है कि माध्यमिक स्तर में निदानात्मक कक्षाओं से शिक्षक उनकी त्रुटियों एवं कमियों को दूर करने का प्रयास करते है। अतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि निदानात्मक कक्षाओं में शिक्षक छात्रों की कठिनाइयों का दूर करने का प्रयास करते है।

सारणी 3 : निदानात्मक कक्षाओं से शिक्षक उनकी त्रुटियों एवं कमियों को दूर करने का प्रयास का अध्ययन (शिक्षक साक्षात्कार के अनुसार)

क्र.	विकासखण्ड	प्रयास करते है		प्रयास नही करते है	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	ब्यौहारी	12	80.00	3	20.00
2.	बुढ़ार	11	73.33	4	26.67
3.	गोहपारू	11	73.33	4	26.67
4.	जयसिंहनगर	12	80.00	3	20.00
5.	सोहागपुर	13	86.67	2	13.33
योग		59	78.67	16	21.33

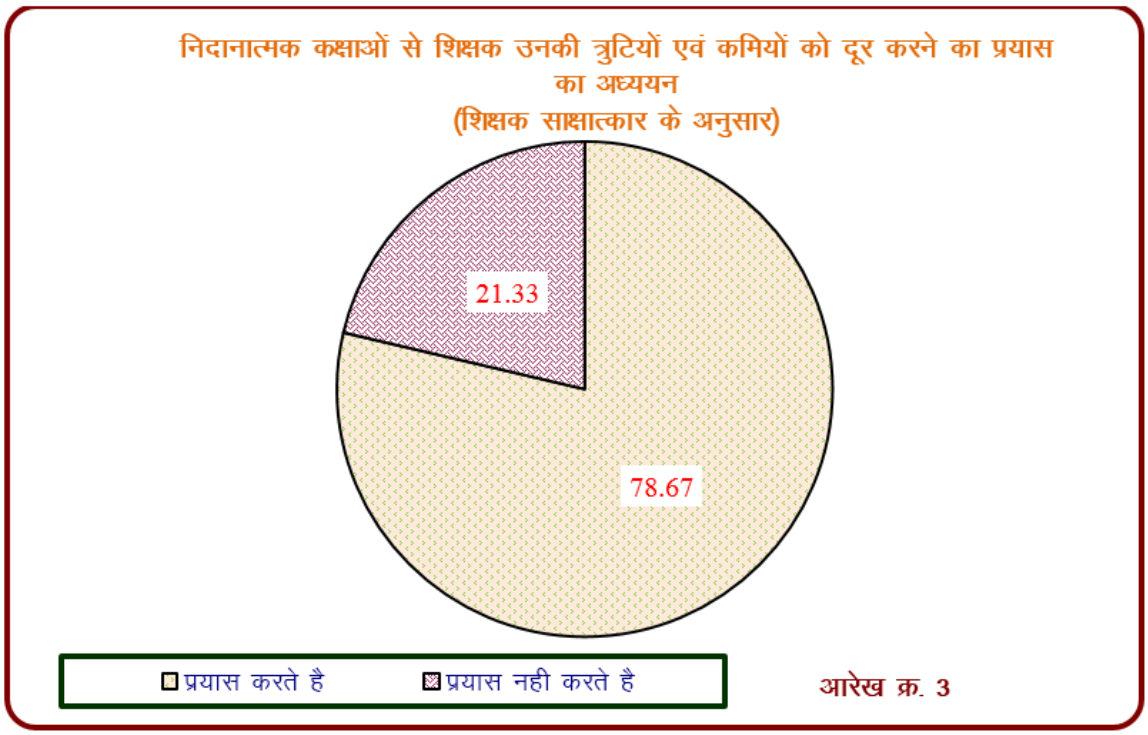

आरेख क्र. 3

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 3 में शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर में निदानात्मक कक्षाओं से शिक्षक उनकी त्रुटियों एवं कमियों को दूर करने का प्रयास करते है से संबंधित जानकारी का अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर के 75 शिक्षकों से प्रश्नावली पत्रक के माध्यम से प्रश्न पूछे गये।

सोहागपुर विकासखण्ड में 86.67 प्रतिशत, ब्यौहारी व जयसिंहनगर विकासखण्ड में 80.00 प्रतिशत तथा बुढ़ार व गोहपारू विकासखण्ड में 73.33 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि माध्यमिक स्तर में निदानात्मक कक्षाओं से शिक्षक उनकी त्रुटियों एवं कमियों को दूर करने का प्रयास करते है।

बुढ़ार व गोहपारू विकासखण्ड में 26.67 प्रतिशत, ब्यौहारी व जयसिंहनगर विकासखण्ड में 20.00 प्रतिशत तथा सोहागपुर विकासखण्ड में 13.33 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि माध्यमिक स्तर में निदानात्मक कक्षाओं से शिक्षक उनकी त्रुटियों एवं कमियों को दूर करने का प्रयास नही करते है।

इस प्रकार जिले में 78.67 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि माध्यमिक स्तर में निदानात्मक कक्षाओं से शिक्षक उनकी त्रुटियों एवं कमियों को दूर करने का प्रयास करते है।

निष्कर्ष –

- शोध क्षेत्र में निदानात्मक कक्षाओं से कमजोर छात्रों के गणित विषय में 50 प्रतिशत कठिन अंशों का निराकरण होता है ऐसा मत 69.34 प्रतिशत शिक्षकों का है, 25 प्रतिशत ही कठिन अंशों का निवारण होता है ऐसा मत 20.00 प्रतिशत शिक्षकों का, 75 प्रतिशत ही कठिन अंशों का निवारण होता है ऐसा मत 10.66 प्रतिशत शिक्षकों का है साथ ही 100 प्रतिशत कठिन अंशों का निवारण नही हो पाता है ऐसा मत शिक्षकों ने स्वीकार किया है। (सारणी क्र. 1)
- जिले में 72.00 प्रतिशत प्राचार्यो का अभिमत है कि माध्यमिक स्तर में निदानात्मक कक्षाओं से शिक्षक उनकी त्रुटियों एवं कमियों को दूर करने का प्रयास करते है। (सारणी क्र. 5.2)

- अध्ययन क्षेत्र में 78.67 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि माध्यमिक स्तर में निदानात्मक कक्षाओं से शिक्षक उनकी त्रुटियों एवं कमियों को दूर करने का प्रयास करते है। (सारणी क्र. 5.3)

सुझाव

लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा निर्देशित निदानात्मक कक्षाओं के विधिवत एवं सुचारू रूप से संचालन हेतु शोधार्थी द्वारा प्रस्तावित सुझाव निम्नलिखित हैं–

1. निदानात्मक कक्षाओं के संचालन में लगे अतिथि शिक्षक, नियमित शिक्षक, या संविदा शिक्षकों को पृथक रूप से प्रोत्साहन राशि स्वीकृत की जाय जिससे वे सुचारू संचालन में सहयोग दे सकें।
2. अभिभावक सम्मेलन मासिक क्रम में आयोजित कर संस्था प्रधान को सतत् रूप से छात्रों की शैक्षिक प्रगति से अभिभावकों को अवगत कराते रहना चाहिए जिससे अभिभावकों का सतत् सहयोग प्राप्त होता रहे।

सन्दर्भ

1. अस्थाना, विपिन (1977): मनोविज्ञान शोध विधियॉ, प्रकाशकः विनोद पुस्तक मन्दिर कार्यालयः रांगेय राघव, आगरा–2।
2. खातून जे. (1988): पर्सनलिटी पैटर्न्स ऑफ हाई एण्ड लो एकेडमिक अचीवर्स ए साइकोलोजिकल स्टडी ऑफ एडोलिसेन्ट्स ऑफ रूहेखण्ड रीजन (उत्तर प्रदेश)। पी.एच.डी. साइको रूहेलखण्ड यूनिवर्सिटी, फिथ सर्वे ऑफ एजूकेशलन रिसर्च। 1988–1993, पृष्ठ 896।
3. प्रधान गोपाल चन्द्र, (1994): वैल्यूज ऑफ स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशलन टू डिफरेन्ट पर्सनल वैल्यूज। इण्डियन एजूकेशलन एब्सट्रैक्ट, इश्यु 3, 1997, पृ. 36।
4. सिंह, राजमल एण्ड वर्मा, एस.के., (1995) : द इफेक्ट ऑफ एकेडमिक एस्पीरेशन एण्ड इंटेलीजेंस ऑफ स्कोलैस्टिक सक्सेस ऑफ ग्रेडर्स। इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रैक्ट, इश्यु 4, 1998, पृ. 9।
5. श्रीवास्तव, मयंक कुमार, (2004): शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 11, अंक 2, अगस्त, 2004।